॥श्रीहरिः॥

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

॥ विद्या शर्मेण शोभते ॥
गीता परिवार
॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु अनुस्वार, विसर्ग एवं आघात प्रयोग सहित, चरणानुसार विभाग, मूल संहिता पाठ के अनुकूल

श्रीमद्भगवद्गीता

चतुर्दश (14वाँ) अध्याय

गुणत्रयविभागयोग

- लर्नगीता एप्प : app.learngeeta.com
- साधक पोर्टल : online.learngeeta.com
- नया पंजीकरण : Joingeeta.com
- पुस्तक क्रय : store.learngeeta.com
- अभ्यास सामग्री : practice.learngeeta.com
- प्रचार सामग्री : learngeeta.com/pracharak
- विवेचन सुनें : vivechan.learngeeta.com
- गीतासेवी बनें : sewa.learngeeta.com
- परीक्षा पंजीकरण : exam.learngeeta.com
- गीता कक्षा उपहार : gift.learngeeta.com
- YouTube : youtube.com/c/GeetaPariwar
- Facebook : facebook.com/geetaparivar
- Instagram : instagram.com/geetaparivar
- Twitter : x.com/Learn_Geeta

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

ॐ

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं(म्) भूयः(फ्) प्रवक्ष्यामि, ज्ञानानां(ञ्) ज्ञानमुत्तमम्।
यज्ज्ञात्वा मुनयः(स्) सर्वे, परां(म्) सिद्धिमितो गताः॥1॥

इदं(ञ्) ज्ञानमुपाश्रित्य, मम साधर्म्यमागताः।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते, प्रलये न व्यथन्ति च॥2॥

मम योनिर्महद्ब्रह्म, तस्मिन्गर्भं(न्) दधाम्यहम्।
सम्भवः(स्) सर्वभूतानां(न्), ततो भवति भारत॥3॥

सर्वयोनिषु कौन्तेय, मूर्तयः(स्) सम्भवन्ति याः।
तासां(म्) ब्रह्म महद्योनिः(र्), अहं(म्) बीजप्रदः(फ्) पिता॥4॥

सत्त्वं(म्) रजस्तम इति, गुणाः(फ्) प्रकृतिसम्भवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो, देहे देहिनमव्ययम्॥5॥

तत्र सत्त्वं(न्) निर्मलत्वात्, प्रकाशकमनामयम्।
सुखसङ्गेन बध्नाति, ज्ञानसङ्गेन चानघ॥6॥

रजो रागात्मकं(वँ) विद्धि, तृष्णासङ्गसमुद्भवम्।
तन्निबध्नाति कौन्तेय, कर्मसङ्गेन देहिनम्॥7॥

तमस्त्वज्ञानजं(वँ) विद्धि, मोहनं(म्) सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभिः(स्), तन्निबध्नाति भारत॥8॥

Learngeeta.com
LEARN GEETA

सत्त्वं(म्) सुखे सञ्जयति, रजः(ख्) कर्मणि भारत।
ज्ञानमावृत्य तु तमः(फ्), प्रमादे सञ्जयत्युत॥9॥

रजस्तमश्चाभिभूय, सत्त्वं(म्) भवति भारत।
रजः(स्) सत्त्वं(न्) तमश्चैव, तमः(स्) सत्त्वं(म्) रजस्तथा॥10॥

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्, प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं(यँ) यदा तदा विद्याद्, विवृद्धं(म्) सत्त्वमित्युत॥11॥

लोभः(फ्) प्रवृत्तिरारम्भः(ख्), कर्मणामशमः(स्) स्पृहा।
रजस्येतानि जायन्ते, विवृद्धे भरतर्षभ॥12॥

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च, प्रमादो मोह एव च।
तमस्येतानि जायन्ते, विवृद्धे कुरुनन्दन॥13॥

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु, प्रलयं(यँ) याति देहभृत्।
तदोत्तमविदां(लँ) लोकान्, अमलान्प्रतिपद्यते॥14॥

रजसि प्रलयं(ङ्) गत्वा, कर्मसङ्गिषु जायते।
तथा प्रलीनस्तमसि, मूढयोनिषु जायते॥15॥

कर्मणः(स्) सुकृतस्याहुः(स्), सात्त्विकं(न्) निर्मलं(म्) फलम्।
रजसस्तुफलं(न्) दुःखम्, अज्ञानं(न्) तमसः(फ्) फलम्॥16॥

सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानं(म्), रजसो लोभ एव च।
प्रमादमोहौ तमसो, भवतोऽज्ञानमेव च॥17॥

ऊर्ध्वं(ङ्) गच्छन्ति सत्त्वस्था, मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था, अधो गच्छन्ति तामसाः॥18॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA
वसासो जीर्णानि यथा

नान्यं(ङ्) गुणेभ्यः(ख्) कर्तारं(यँ), यदा द्रष्टानुपश्यति।
गुणेभ्यश्च परं(वँ) वेत्ति, मद्भावं(म्) सोऽधिगच्छति॥19॥

गुणानेतानतीत्य त्रीन्, देही देहसमुद्भवान्।
जन्ममृत्युजरादुःखैः(र्), विमुक्तोऽमृतमश्नुते॥20॥

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतान्, अतीतो भवति प्रभो।
किमाचारः(ख्) कथं(ञ्) चैतांस्, त्रीन्गुणानतिवर्तते॥21॥

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं(ञ्) च प्रवृत्तिं(ञ्) च, मोहमेव च पाण्डव।
न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि, न निवृत्तानि काङ्क्षति॥22॥

उदासीनवदासीनो, गुणैर्यो न विचाल्यते।
गुणा वर्तन्त इत्येव, योऽवतिष्ठति नेङ्गते॥23॥
समदुःखसुखः(स्) स्वस्थः(स्), समलोष्टाश्मकाञ्चनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरः(स्), तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः॥24॥

मानापमानयोस्तुल्यः(स्), तुल्यो मित्रारिपक्षयोः।
सर्वारम्भपरित्यागी, गुणातीतः(स्) स उच्यते॥25॥

मां(ञ्) च योऽव्यभिचारेण, भक्तियोगेन सेवते।
स गुणान्समतीत्यैतान्, ब्रह्मभूयाय कल्पते॥26॥

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहम्, अमृतस्याव्ययस्य च।
शाश्वतस्य च धर्मस्य, सुखस्यैकान्तिकस्य च॥27॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(यँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

Learngeeta.com

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Ver 7.0
सप्तम संस्करण

स्तर 2 उच्चारण नियमावली

- **अवग्रह** - अवग्रह 'ऽ' केवल एक चिह्न है जो लुप्त हुये 'अकार(अ)' का सूचक है। स्वतन्त्ररूप उच्चारण नहीं है।
- **मृदु व्यंजन** - वर्गीय व्यंजनों के तृतीय, चतुर्थ, पंचम (ग, घ, ङ,ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म) वर्ण, य, र, ल, व, ह।
- **कठोर व्यंजन** - वर्गीय व्यंजनों के प्रथम, द्वितीय वर्ण (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ) एवं श, ष, स
- **जिह्वामूलीय** - 'क' या 'ख' से पहले विद्यमान अर्धविसर्ग जिह्वामूलीय (×ख), उच्चारण ख् की तरह
- **उपध्मानीय** - 'प' या 'फ' से पहले विद्यमान अर्धविसर्ग उपध्मानीय (×फ), उच्चारण फ् की तरह
- **श्रीमद्भगवद्गीता में प्रयुक्त छन्द** - श्रीमद्भगवद्गीता में दो ही प्रकार के छन्दों का उपयोग हुआ है।
  1. **अनुष्टुप्** - 4 चरण, 32 अक्षर, प्रत्येक चरण में 8 अक्षर 2. **त्रिष्टुप्** - 4 चरण, 44 अक्षर, प्रत्येक चरण में 11 अक्षर

  # पूरी गीता में पांच स्थानों पर अपवादस्वरुप (2/6, 2/29, 8/10, 11/1,15/3) किसी चरण में नियत अक्षरों से एक अक्षर न्यून या अधिक पाये जाते हैं।
- **आघात के अपवाद नियम** - स्वर के पश्चात् संयुक्त वर्ण होने पर भी उसमें एक ही वर्ण के दो बार आने पर, तीन व्यंजनों के संयुक्त होने पर, प्रथम वर्ण रेफ(उपर र्) या हकार होने पर आघात नहीं दिया जाता।
- **विसर्ग(ः) सन्धि नियम** विसर्ग(ः) का उच्चारण पूर्व/पर वर्ण सन्दर्भानुसार ह, ख्, फ्, श्, ष्, स्, र् जैसा होगा।

1. **उत्व सन्धि - अ+ः+अ = ओऽ** - दर्प+ः+अभिमानश्च = दर्पोऽभिमानश्च

   अ+ः+मृदुवर्ण = ओ - दुराचार+ः+भजते = दुराचारो भजते

2. **लोप सन्धि - अ+ः+अकारभिन्नस्वर** = मन+ः+आधत्स्व = मन आधत्स्व

   आ+ः+कोई भी स्वर या मृदुवर्ण = माययापहृतज्ञाना+ः+आसुरम् = माययापहृतज्ञाना आसुरम्

3. **रुत्व सन्धि - अ/आ भिन्नस्वर + : +कोई भी स्वर / मृदुवर्ण = र्** - दु+ : + निरीक्ष्यम् = दुर् + निरीक्ष्यम् = दुर्निरीक्ष्यम्

   कोई भी स्वर (अव्यय में) + : + कोई भी स्वर / रेफभिन्न मृदुवर्ण = र् - पुन+ :+ जन्म = पुनर्+ जन्म = पुनर्जन्म

4. **शत्व, षत्व, सत्व सन्धि -**

   कोई भी स्वर + : +
   - च / छ / श ⟶ **श्** ⟶ योगिन + : + चैनम् = योगिनश्चैनम्
   - ट / ठ / ष ⟶ **ष्** ⟶ धनु + : + टङ्कार = धनुष्टङ्कार
   - त / थ / स ⟶ **स्** ⟶ हन्यु + : + तन्मे = हन्युस्तन्मे

5. **जिह्वामूलीय, उपध्मानीय सन्धि-**

   कोई भी स्वर + : +
   - क / ख ⟶ ख् की ध्वनि ⟶ द्विषत + : + क्रूरान् - द्विषत(×ख्) क्रूरान्
   - प / फ ⟶ फ् की ध्वनि ⟶ क्रोध + : + पारुष्यमेव = क्रोध(×फ्) पारुष्यमेव

Learngeeta.com

योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(वँ), वासुदेवं(वँ) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(वँ) वीरं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम्॥

© GEETA PARIWAR
गीता परिवार के साहित्य को किसी भी प्रकार से अन्य संस्था अथवा अन्य स्थान पर उपयोग/प्रकाशित करने से पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। अनुमति लेने हेतु पूर्ण प्रयोजन के साथ हमें consent@learngeeta.com पर ईमेल करें।